भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 29 अंक : 2 | 15.3.2006 बुधवार (मार्च - अप्रैल) | प्रति अंक : 10.00

दिल्ली हुई सुहागिन आपके आने से, हुए हम सनाथ आपको पाने से....

१३ मार्च १९३७ यानि – उत्तर भारत के मुक्तों के प्राणाधार व 'दिल्ली गुणातीत परिवार' के दिल की धड़कन – प.पू. गुरुजी के अवतरण का महामंगलकारी दिन... जब वे, हम सब के जीवन में प्रभु बसाने - हमें धन्य करने, धरती पर आए। एक बार पू. ललिता बा को मिलने कुछ बहनें उनके घर गई थी। बातों - बातों में प.पू. गुरुजी के जन्म के बारे बताते हुए पू. बा बोलीं – *'प.पू. गुरुजी का जन्म सुबह छः बजे हुआ था। **एक तरफ आकाश में सूर्य उगा और एक तरफ यह सूरज प्रगटा...'*** पू. बा के मुख से निकले ये सहज उद्गार उन सभी की आत्मा को मानो छू गए... ऐसा लगा कि स्वयं प.पू. काकाजी महाराज ही प्रतीति कराने उनमें से बोल गए हों। हम सभी जानते हैं कि प.पू. गुरुजी के जीवन में प.पू. काकाजी महाराज ने प्रवेश किया, तो सर्वप्रथम बात सूर्य की करी थी –

संतवर्य गुरुहरि योगीजी महाराज एक सूर्य हैं और उनके संबंध से मैं भी एक सूर्य हूँ।

और...

२५ जनवरी १९८६ को प.पू. काकाजी महाराज ने प.पू. गुरुजी को जब अंतिम आशीर्वाद दिए, जिसे **प.पू. पप्पाजी महाराज के शब्दों में** कहें तो – **'शक्तिपात'** किया, तब भी सूर्य के संदर्भ से ही कहा कि –

(आकाश की ओर दिखाते) वो आकाश का सूर्य,

(स्वयं की छाती पर हाथ रख कर) यह सूर्य

और

(प.पू. गुरुजी की छाती पर हाथ फिराते) तुम्हारे हृदयाकाश का सूर्य –

जाओ तीनों एक !

सच, हम सब के जीवन में-आत्मा में उजाला प्रगटाने ही तो प.पू. गुरुजी का प्रागट्य है।

दिल्ली जैसी मायावी नगरी में गुरुहरि योगीजी महाराज का संकल्प साकार करने प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी जैसे अद्वितीय पात्र को चुना। प.पू. काकाजी ने अत्यधिक परिश्रम लेकर उत्तर भारत के मुक्तों को भगवान का अपरोक्ष संबंध दिया और अध्यात्म के पथ पर अग्रसर होने हमें प.पू. गुरुजी के रूप में एक दिव्य राहबर दिया। **'स्वामिनारायण'** नाम भी जहाँ कभी किसी ने सुना तक नहीं था, उस धरती पर **'श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज'** को बिठा कर प.पू. गुरुजी ने अनेक चैतन्यों को **'स्वामिनारायण मंत्र'** की मानो रटना लगवा दी।

प.पू. काकाजी की छत्रछाया व संकल्प का बल लेकर, दिल्ली-पंजाब-हरियाणा के मुक्तों के लिए, मानो उनके आत्यंतिक मोक्ष के लिए, एक नई उपासना लेकर प.पू. गुरुजी १९६९ में दिल्ली की धरती पर आए और... प.पू. काकाजी के साथ का बुद्धि से परे का विश्वास, अटूट प्रीति व अंतरायरहित के संबंध से गुणातीतभाव में स्थित एक 'विभूति' ने आकार लिया –प.पू. गुरुजी के रूप में !

प.पू. गुरुजी के रूप में प.पू. काकाजी ने हमें कैसी अनुपम भेंट दी है, वह निम्न बात से ख्याल पड़ता है –

गुरु रामानंदस्वामिजी के समय की बात है – उत्तर भारत से दो साधु द्वारकाजी की यात्रा के लिए जा रहे थे। रास्ते में उन्हें सद्. रामानंदस्वामी का भक्त मिला। उसने उन दोनों की सेवा करी और उन्हें 'लॉज' गाँव में विराजमान गुरु रामानंदस्वामी के पास ले गया। उसमें शीतलदास नाम के साधु को **आश्रम में पाँव रखते ही अनहद् शांति महसूस हुई।** रामानंदस्वामी के **दर्शन करने से ही उसके अंतर में ठंडक हो गई। प्रभुधारक संत की यही तो विशेषता है !** 'ब्रह्म' का एक गुण है – 'आनंदोब्रह्म' ! उसका संबंध चारों ओर और भीतर में आनंद प्रगटा देता है। इसी तरह प.पू. गुरुजी चाहे किसी से बात करें या ना करें, पर मंदिर में दाखिल होते ही और उनके पास बैठते ही हर एक व्यक्ति अपनापन, निश्चिंतता व शांति महसूस करता है। **प.पू. गुरुजी की हाज़िरी मात्र पूरे माहौल को मानो इलॅक्ट्रीफाई कर देती है।**

❋ २ नंवबर २००५ को अन्नकूट के दिन टी.वी. आर्टीस्ट एवं कत्थक नृत्यांगी **सौ. प्राची** और **श्री विश्वास पंडया** दिल्ली मंदिर दर्शन करने आए थे। तब ९ दिसंबर को होने वाली उनकी शादी के फेरे निमित्त उन्होंने प.पू. काकाजी महाराज की 'पुष्प समाधि' पर प्रदक्षिणा करी। यहाँ से जाकर सौ. प्राची ने अपने पिताश्री श्री सुधीरभाई को बताया कि –

वहाँ मंदिर में जैसे स्वर्ग में होऊँ ऐसा मुझे महसूस हो रहा था।

ऐसे ही उनके भाई **प.भ. तेजस** ने पहली बार मंदिर का माहौल व प.पू. गुरुजी का दर्शन करके यही कहा कि –

वहाँ मंदिर में तो हॅवन में हों ऐसा महसूस होता है !

चेतन की तो बात ही अलग है, जड़ वस्तु भी मानो उनके संबंध से जीवंत हो उठती है ! प.पू. गुरुजी के साथ हम कहीं जा रहे हों और आगे उनकी गाड़ी जा रही हो, तो वो गाड़ी का दर्शन करते-करते ही समय कहाँ बीत जाता है, उसका ख्याल ही नहीं पड़ता। रास्ते में वैसी ही कई कितनी गाड़ियाँ जाती होंगी, पर प.पू. गुरुजी की गाड़ी की ओर ही हमारी नज़र टिकी रहती है।

हम कितने भाग्यवान-खुशनसीब हैं कि हम पर प.पू. गुरुजी जैसे गुणातीतभाव में रहते संत की दृष्टि पड़ी !

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का एक प्रसंग है–जूनागढ़ के नवाब ने मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी को एक बार अपने बगीचे में बुलाया था। पूजा करवा कर भेंट इत्यादि दी। बगीचे में बैठे हुए मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की दृष्टि अचानक एक मोर पर टिक गई; जबकि भगवान की मूर्ति के सिवा दृष्टि टिका कर वे कभी भी कहीं देखते नहीं थे। पर, मोर का भाग्य ऐसा जगा कि स्वामिश्री की दृष्टि पड़ी ! बाद में एक पारधी वहाँ आ पहुँचा। उसके कई प्रयासों के बाद भी मोर को एक भी गोली लग नहीं पाई। गोलियों की आवाज़ सुन कर बगीचे का माली वहाँ आ गया। स्वामिजी का वो भक्त था। देख कर, उसने पारधी को कहा – तू कितनी ही गोलियाँ दाग, पर यह मोर मरने वाला नहीं है; उस पर गुणातीतानंदस्वामिजी की दृष्टि पड़ गई है।

और...हम सब जानते हैं कि **मोर** के **'राष्ट्र पक्षी'** हो जाने से आज भी हम उसे मार नहीं सकते ! स्वामिजी की कृपादृष्टि से मोर की ऐसी रक्षा हो गई, तो ऐसे गुणातीत पुरुषों की कृपादृष्टि में आने पर हमारी 'रक्षा' में तो क्या संदेह ? लेकिन, हमारी मायिक बुद्धि यह मानती नहीं है। तभी तो मुक्तों में प्रवेश करके प्रसंगों द्वारा प्रभु हमें पल-पल दर्शन करा ही देते हैं।

❋ जगरांव से आते **प.भ. स. दलजीत सिंहजी** कभी भी साधु-संतों में विश्वास नहीं करते थे। उनकी पत्नी जगरांव के नज़दीक के एक गाँव में विराजमान एक गुरु की भक्तन हैं। एक-दो बार वे अपनी पत्नी के आग्रह पर उनके साथ वहाँ गए, लेकिन उन्हें वहाँ कोई श्रद्धा नहीं हुई। फिर जगरांव के हरिभक्त के संबंध से वे दिल्ली मंदिर आने लगे और प.पू. गुरुजी के प्रति एक लगाव से जुड़ गए। बाद में प.भ. दलजीत सिंहजी अपनी पत्नी के साथ उनके गुरु के पास किसी उत्सव में गए थे। वहाँ उनकी पत्नी के गुरु ने उन्हें कहा कि –

'गुरु एक होता है, दो गुरु नहीं होते। आपको दिल्ली में जो गुरु मिले हैं – जिनके पास आप जाते हैं, वे बहुत पहुँचे हुए हैं। कस के उनके चरण पकड़ लेना। गुरु के चरण हाथ से जल्दी छूट जाते हैं, तो छोड़ना नहीं - कस के पकड़ रखना।'

❋ दिल्ली सत्संग के हमारे पुराने जोगी अक्षरनिवासी प.भ. जानी साहेब के सुपुत्र **प.भ. कीर्तिभाई** की दुकान पर वैसे ही आ पहुँचे किसी ज्योतिषी ने उन्हें कहा कि –

'आपका गुरु खूब पावरफुल है और उसी के कारण आप पर ग्रह वैगरह प्रभाव नहीं करते, वर्ना आप पर तो खूब परेशानी आ पड़े।'

ऐसे प्रसंगों से यह एहसास होता है कि सामान्य से दिखने वाले प.पू. गुरुजी सिर्फ एक साधु मात्र नहीं हैं, बल्कि श्रीजी महाराज द्वारा अपने गुरु रामानंदस्वामी से माँगा निम्न वरदान भी उनके द्वारा चरितार्थ होता है –

'आपके सत्संगी को एक बिच्छु के डंक का दुःख होने वाला हो तो मेरे रोम-रोम में कोटि बिच्छु का दुःख हो, लेकिन आपके सत्संगी को वह न हो। आपके सत्संगी के प्रारब्ध में भीख माँगना लिखा हो, तो वो रामपत्तर मुझे देना, लेकिन आपके सत्संगी अन्न-वस्त्र से दुःखी न हों...

...मेरे प्रगट संत को पहचान कर आसरा करने वाले हरिभक्त पर ग्रह - पनौती, भूत - प्रेत, क्षुद्र एवं मलिन देवी - देवता, मंत्र - तंत्र, शगुन -अपशगुन या उससे भी अधिक – काल, कर्म और माया का प्रभाव हावी नहीं होगा। विधाता के लेख भी मेरे आश्रित को आंच नहीं दे पाएंगे ! उसे यदि प्रारब्ध का दुःख भोगना भी होगा, तो सूली का दुःख शूल की थोड़ी-सी वेदना में टाल दूँगा...'

❋ २६ जनवरी २००१ की सुबह नौ बजे गुजरात में जब विनाशकारी भूकंप आया, तब प.पू. गुरुजी व प.भ. पुरी साहेब एवं कई मुक्त सूरत में प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के मित्र श्री सतीष बंसलजी के **'पार्क इन'** हॉटल में थे। गुजरात में जहाँ-जहाँ भूकंप के झटके खूब तेजी से आए, वहाँ कई ईमारतें ढह गईं। हॉटल 'पार्क इन' तब भूकंप के झटकों से ऐसा झूल रहा था कि हॉटल का पूरा स्टाफ व ठहरे हुए सब के सब हॉटल से बाहर निकल आए थे। पर आख़िरकार हॉटल को कुछ नहीं हुआ, जबकि श्री सतीष बंसलजी का एक हॉटल कच्छ में भी था, वह भूकंप दौरान पूरा ढह गया। सो, प.भ. बंसलजी के मन में ऐसा विश्वास बैठ गया कि प.पू. गुरुजी इस हॉटल में थे, तभी ऐसी रक्षा हो गई। इस घटना के बाद वे एटलांटा चले गए थे। सो, तब प.पू. गुरुजी के दर्शन नहीं कर पाए थे। लेकिन २००५ में जब **श्री बंसलजी** भारत आए, तो प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी के साथ दिल्ली मंदिर में दर्शन करने और प.पू. गुरुजी का धन्यवाद करने खास आए।

❋ चार - पाँच साल पहले करीब ढाई सौ मुक्तों को लेकर प.पू. गुरुजी 'मनाली' शिविर करने गए थे। प.भ. प्रमीतभाई की जान - पहचान से प.पू. गुरुजी व सभी वहाँ हॉटल **'हाई लॅन्ड'** में रुके थे। उस एरिया में ट्राफिक का ज्यादा शोर-शराबा भी नहीं रहता। हॉटल के मालिक **श्री आनंदजी** व उनकी पत्नी **सौ. हेमा दीदी** ने खूब अपनेपन से सब सुविधा कर दी थी और उन्होंने महसूस किया कि प.पू. गुरुजी व निष्ठा वाले मुक्तों के वहाँ ठहरने के बाद उनकी हॉटल में पहले से ज्यादा बरकत होने लगी। और... इतना अल्प परिचय होने के बावजूद भी **वे बहुत करीबी से सत्संग से जुड़ गए !** ऐसी बातों से प.पू. काकाजी द्वारा १९५७ - ५८ में दिए आशीर्वचन कि –

' तू पैसा-पैसा क्या करता है ? राजा ! हमें तो ऐसा बनना है कि ट्रीमेंडस वेल्थ मे गो टु हीम, हूम यू ब्लेस ' –साकार हुए नज़र आते हैं।

इससे भी अधिक, सच्चे संत हमारी थोड़ी-सी सेवा, अरे ! सद्भावना का फल तो हमें किसी ना किसी रूप में दे ही देते हैं इतना ही नहीं, बल्कि वे हमारे जीवन में प्रभु को बसा देते हैं। प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को कहा था –

मुकुंद, हमारी जो कोई सेवा करे; प्रभु उसका इस लोक का तो सुधारे, पर – उसे प्रभु की निष्ठा हो व उसे सत्संग की चिकनाई आए – यह हमारा मक़सद होना चाहिए।

वाकई – भगवान स्वामिनारायण ने अपने आश्रितों को भुक्ति, मुक्ति और जीतेजी एकांतिकी स्थिति - 'ब्राह्मीस्थिति' – तीनों चीजें दी हैं !

❋ थोड़े समय पहले ही सौ. प्राची के जरिये परिचय में आए मुंबई के **प.भ. विश्वास पंडयाजी** ने ९ दिसंबर को उनकी शादी में आशीर्वाद देने प.पू. गुरुजी को बुलाया था। घर से मिले धर्म के संस्कारों से वे श्रीनाथजी में विश्वास करते हैं। जिस दिन उनकी शादी थी उन्हें स्वप्न आया कि श्रीनाथजी स्वयं उनकी शादी में आए हैं। और... प.पू. गुरुजी के उनकी शादी में शामिल होने से उन्हें ऐसा एहसास हुआ मानो प.पू. गुरुजी के रूप में श्रीनाथजी ही साक्षात् आए हैं।

और... शादी एवं रिसेप्शन दौरान प.भ. विश्वासजी की नज़र लगातार प.पू. गुरुजी की ओर ही रही। बीच में आ रहे फोटोग्राफर्स को भी प.भ. विश्वासजी हटा देते थे, ताकि उन्हें प.पू. गुरुजी के दर्शन में रुकावट ना हो।

इतने कम समय में ऐसा लगाव-विश्वास होना हम सभी को एहसास कराता है कि बाह्यदृष्टि से हमें जो एक

साधारण 'साधु' दिखते हैं, दरअसल **वे तो जिसको जैसा रूप भाता है वैसे ही होकर उसकी आत्मा का श्रेय करती एक '*विभूति*' है।** सभी गोपियों के कृष्ण के प्रति के आकर्षण की बातें तो हम एक 'श्रीमद् भागवत' से सुनते - पढ़ते हैं, पर **'प्रगट की भक्ति' में तो एक - एक भक्त का एक - एक 'भागवत' है।**

❋ पिछले वर्ष अक्षरज्योति की साधक बहन **पू. परछाईं** के दोनों गुर्दे खराब होने के बारे २६ फरवरी को अचानक पता चला। एक बार तो सभी डूब जैसे गए। लेकिन १३ मार्च को जब प.पू. गुरुजी की जन्मजयंती का घरेलू उत्सव था, तब प.पू. गुरुजी ने उनकी प्रसादी की माला पू. परछाईं को भिजवाते हुए कहलवाया कि –

कुछ सोचने करने के बजाय अभी तू भजन करा करना और १३ दिसंबर को तू मुझे यह माला वापिस भेजना।

यह बात सुन कर सभी को भीतर में ठंडक हो गई कि प.पू. गुरुजी के जमानती तो प.पू. काकाजी हैं, सो वे उनका वचन पूरा करेंगे ही।

९ मई को पू. परछाईं के गुर्दे प्रत्यारोपण का ऑपरेशन अमदावाद की सिविल हॉस्पिटल में हुआ; हाँलाकि डॉ. त्रिवेदी ने शुरुआत में कह ही दिया था कि ***इट्स ए गॉन केस।*** *परंतु...* पू. परछाईं का ऑपरेशन ठीक हो गया और धीरे - धीरे वो स्वस्थ भी हो गई। १३ दिसंबर का शुभ दिन भी आ गया, जब उसने प.पू. गुरुजी को माला वापिस भिजवाई।

आश्चर्य की बात है कि पू. परछाईं के मॅडिक्लेइम का चेक भी इसी दिन इस्यु हुआ। मानो यह भी एक संकेत था कि सब कुछ प्रभु की ओर से सुनिश्चित है और प.पू. गुरुजी के शब्दों में कहें तो भगवान ने उनका इन्स्यॉरन्स भी पूरा कर दिया कि – ***पू. परछाईं की मॅटर ईझ ओवर नाऊ।***

मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी ने सत्पुरुष की महिमा बताते हुए कहा है कि – ***'...भगवान इनके वश हैं, जो वे कहें वो भगवान करते हैं...'***

प.पू. गुरुजी ने कहा कि १३ दिसंबर को मुझे माला वापिस कर देना और १३ दिसंबर को ही इन्स्यॉरन्स का ड्राफ्ट भी इस्यु होना – इस बात को सार्थक करता है। **बुद्धि का ढाँचा तोड़ कर प्रभु रखे संत को निहारेंगे, तो संत में हमें प्रभु के दर्शन हो जाएंगे।**

❋ लंदन के **प.भ. कांतिभाई राजगोर** पू. अश्विनभाई के साथ खूब लगाव से जुड़े हुए होने के कारण प.पू. साहेब के होकर जीते हैं। प.पू. गुरुजी की ट्रान्स्पेरन्सी व सहजता के कारण उन्हें प.पू. गुरुजी के प्रति भी खूब सद्भाव व पूज्यभाव है। १९९६ में वे अपनी धर्मपत्नी **सौ. ललिता बहन** के साथ दिल्ली आए थे। प.भ. कांतिभाई उन्हें प.पू. गुरुजी की महिमा की बातें खूब करते। एक बार उनकी पत्नी ने वैसे ही कह दिया कि अच्छा ! अगर तुम्हारे गुरुजी सच में ऐसे हैं, तो आज मंदिर जाने पर मुझे जामुन खिलाएं। उस समय दिल्ली में जामुन का मिलना नामुमकिन था। पर, आश्चर्य की बात कि सौ. ललिता बहन अभी रिसेप्शन हॉल में दाखिल ही हुए कि प.पू. गुरुजी ने सेवक से उनको जामुनभरा कटोरा भिजवाया ! यह देख कर सौ. ललिता बहन तो अचंभे में ही रह गईं और... प.पू. गुरुजी में श्रद्धा भी बैठ गई।

यहाँ पर सद्. ब्रह्मानंदस्वामिजी का प्रसंग सहज ही याद आ जाता है कि जब कवि लाडुदानजी के रूप में वे पहली बार श्रीजी महाराज के दर्शन करने गए, तो उनका एक संकल्प था कि सहजानंदस्वामी यदि सच में 'प्रभु का स्वरूप' हैं तो मुझे गुलाब के फूलों का हार पहनाएं, जबकि तब गुलाब के फूल का मौसम नहीं था। पर... महाराज ने अपनी प्रसादी का गुलाब के फूलों का हार पहना कर उन्हें प्रतीति कराई !

यूं आठों प्रहर जिनके हृदय में प्रभु विराजते हैं, ऐसे प.पू. गुरुजी फिर भी हमारे साथ हमारे जैसे बन कर, हमारे लेवल पर आकर हमारे हर एक कामों में रसबस होते हैं और...गुणातीत स्वरूपों की - प्रत्यक्ष प्रभु की अपार महिमा गाकर, संबंध में आए चैतन्यों को हुई दुर्लभ प्राप्ति का मूल्य समझा कर पराभक्ति अदा करने के लिए अपने आपको वे '*निमित्त*' ही मानते हैं।

दिल्ली मंदिर के महंत होने से प.पू. गुरुजी का बड़प्पन नहीं है, बल्कि ऐसी गुणातीत साधुता के शृंगार से है।

❋ सर्दी के दिनों में दिल्ली में मटर खूब सस्ती हो जाती है। मंदिर में पूरे वर्ष मटर इस्तेमाल कर सकें और बाजार से मंहगी मटर ना लानी पड़े, इस हेतु सर्दीयों में दस - बारह बोरी मटर छील कर रख लेते हैं। सो, सर्दी में कई बार शाम को मंदिर आए हरिभक्त मटर छीलते हैं। हरिभक्तों के साथ

प.पू. गुरुजी खुद भी कभी - कभार मटर छीलने बैठ जाते हैं। उन्हें कोई मना करता है, तो कहते हैं कि – ***मैं जितनी मटर खाता हूँ, उतनी तो छीलूं !*** प.पू. गुरुजी द्वारा कही यह बात खूब मार्मिक है !

सब के साथ वे ऐसे जो रसबस होते हैं, उससे उनसे किसी को कोई दूरी नहीं लगती और ऐसा माहौल मॅसेज भी देता है कि परिवार के पूरे सदस्य यूं एक जुट होकर जीएं। ऐसा उनका कार्यकलाप देख कर गुणातीत पुरुषों की जीवनशैली प्रतीत होती है।

आपस में एक **पारिवारिक कुटुंबभावना से जुड़ा दिव्य समाज** स्थापित करना महाराज चाहते थे। **तभी तो लगातार ३० साल तक महाराज दादाखाचर के दरबार में रहे।** यदि महाराज चाहते तो दो - चार साल में ही मंदिर बाँध कर वहाँ संतों के साथ रहते।

प.भ. काशीरामभाई राणा साहेब भी मंदिर का ऐसा माहौल देख कर बोले थे कि–

'धर्म व पारिवारिक माहौल का ऐसा समन्वय बहुत ही कम देखने को मिलता है, जो मैंने यहाँ – प.पू. गुरुजी के पास देखा है। प.पू. गुरुजी जैसे साधु बहुत रॅर होते हैं।'

❋ '**भक्तों से आत्मीयता**' में ही मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी ने 'सत्संग' की परिभाषा को समेटा है। एक बार जन्माष्टमी के उत्सव के लिए बोटाद के शिवलाल सेठ संघ लेकर आए। रास्ते में बरसात खूब होने के कारण वे सब भीगे हुए थे। स्वामिश्री ने कोठारी से कहा कि –'कोठार में से कपड़े के दो-चार थान ले आओ।' आज्ञा मुताबिक कोठारी वो थान लेकर आए। स्वामिश्री उसमें से चार-चार हाथ की धोती फाड़ने लगे और दंडवत् कर रहे हरिभक्तों को रोक कर उन्हें वे कोरे कपड़े दिए कि पहले सब अपने गीले कपड़े बदल लो।

तत्पश्चात्, जन्माष्टमी का व्रत होने के बावजूद इतनी दूर से आए और भीगे हुए इन हरिभक्तों को स्वामी ने कहा कि – 'तुम्हारा व्रत अब पूरा हो गया, सो ब्रह्मचारी अभी खिचड़ी बना रहे हैं, वह सभी खा लेना।' यूं सभी हरिभक्तों को ***कुटुंबभाव के एक अपनेपन से*** खिचड़ी-कढ़ी खिला कर उनकी थकान दूर कर दी !

ऐसे ही प.पू. गुरुजी को एक बार पता चला कि मंदिर से जुड़े कुछ मुक्त हर बुधवार की शाम को सभा के बाद मंदिर से दस बजे तक घर जाकर, फिर रात्रि भोजन करके नज़दीक लगते 'बुध बाज़ार' में ग्यारह बजे सब्जी लेने जाते हैं; ताकि उस समय वहाँ कम दाम में सब्जी मिल जाए। प.पू. गुरुजी ने सोचा कि ये सब ठंड में देर रात को बची हुई बेकार सब्जी, और वो भी थोक के दामों के मुकाबले मंहगी लाते हैं; तो मंदिर में 'मंडी' से थोक के दाम में आती अच्छी सब्जी के साथ ही इनको 'नो प्रोफीट - नो लॉस बॅझीझ' पर देने के लिए भी क्यों ना मंगा लिया करें ? सो, प.पू. गुरुजी ने तय किया कि हर शनिवार की दोपहर तक मंडी से सब्जी मंगा कर शाम की सभा के बाद रात को नौ बजे इन सभी सत्संगियों के लिए 'कॅश एन्ड कॅरी' करने रख दिया करेंगे।

और... यह सुविधा करी तो पहले दिन एक बॉर्ड पर प.पू. गुरुजी ने लिखवाया –

'हे मेरे प्रिय परिवारजनों !
सबसे सस्ते दाम में और सबसे बढ़िया सब्जी
खरीदिए आप अपनी हाट से...'

इस पंक्ति से ही उनका हमारे प्रति प्यार और कन्सर्न झलक रहा था।

दोपहर तक सब्जी आ जाने के बाद पू. सुहृद्स्वामी के निरीक्षण में सेवक उन सब्जियों की एक किलो या दो किलो की थैलीयाँ बना कर रॅक्स में रख देते। हर रॅक पर सब्जी का नाम व दाम लिखा होता और साथ ही पैसे रखने का एक डिब्बा ! जो भी सब्जी आप लो, उसके पैसे उसमें डाल दो। **भक्तों के साथ की प.पू. गुरुजी की आत्मीयता का -कुटुंबभाव का यह एक अनुपम दर्शन है।**

यूं जीवन के केन्द्र में संत को रखते हुए एक कुटुंबभाव से सभी को सत्संग में अग्रसर करना ही उनका उद्यम है ! और... इस दिव्य परिवार के मुक्तों की हर प्रकार से आध्यात्मिक या व्यवहारिक परवरिश करना ही मानो उनका जीवन है। जब भी दिल्ली मंदिर में कोई उत्सव होता है और बाहर से आने वाले भक्तों के लिए मंदिर के आस-पास कोई खाली फ्लैट में रहने-करने की व्यवस्था करनी होती है, तो प.पू. गुरुजी सेवकों को हर बार अचूक सूचना देते हैं कि वहाँ लाईट - पानी सब चेक करना; टॉयलेट में फ्लश चलता है या नहीं, बाथरूम की या कमरों की कुंडी वगैरह ठीक से लगती - करती है या नहीं – ये सब ठीक से देख लेना। ऐसे ही किसी के लिए मंदिर से गाड़ी भी जानी हो, तो सेवकों को सूचना देते हैं कि गाड़ी में पॅट्रोल-डीज़ल वगैरह चेक करके

भेजना। गाड़ी दिल्ली से बाहर भेजनी हो तो सर्विस कराने, सीट के कवर बदलवाने, गाड़ी के काग़ज़ इत्यादि हैं या नहीं ये सब कुछ चेक करने सूचना देते ही देते हैं। गुणातीत स्वरूपों के प्रति तो हमें ऐसी 'भक्ति' अदा करनी ही है, लेकिन भक्तों के प्रति भी वही भाव – जो 'पराभक्ति' कही जाए –इस राह पर प.पू. गुरुजी ख़ुद तो चल ही रहे हैं; साथ ही उनके संबंध में आए मुक्तों के लिए प्रेरणा स्रोत बने हैं।

दूसरी ओर, प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी की शान बढ़ाई है और उनके द्वारा दिए '**भावात्मक एकता**' एवं '**सर्वदेशियता**' के सिद्धांत को वे अपने वर्तन से फैला रहे हैं। **इनका यही वर्तन हमारे हर एक केन्द्र से आए मुक्तों को सहज स्पर्श कर जाता है और उन्हें प.पू. काकाजी की हाज़िरी की अनुभूति कराता है।**

❋ सत्संग के पुराने जोगी **डॉ. कीकाणी** जूनागढ़ से दिल्ली आए थे। उन्होंने प.पू. काकाजी को खूब नज़दीक से देखा है। चार-पाँच दिन मंदिर में ठहरते हुए उन्होंने प.पू. गुरुजी की दिनचर्या -उनकी चेष्टाएं जो देखीं, तो सहज ही बोल उठे – ***गुरुजी काकाजी की कार्बन कॉपी हैं।***

❋ मुंबई-पवई में ब्रह्मस्वरूप प.पू. शास्त्रीजी महाराज और ब्रह्मस्वरूप प.पू. योगीजी महाराज की स्वर्ण मूर्तिप्रतिष्ठा के महोत्सव पर कॅलिफॉर्निया से **पू. किरण दीदी** आए थे। वापसी में उनकी फ्लाईट का एक दिन का हॉल्ट दिल्ली में था। सो, वे दिल्ली मंदिर आईं और अक्षरज्योति में रुकीं। लौटते समय वे मंदिर आईं तो उन्होंने प.पू. गुरुजी को कहलवाया कि –

'काकाजी यहाँ प्रत्यक्ष विराजते हैं - ऐसा अनुभव होता है।'

फिर जब वे एयरपोर्ट जा रही थीं तो गाड़ी में बैठते-बैठते भी बहनों को बोलीं कि –

'बहुत समय के बाद ऐसा लगा कि आई हॅव बीन टु काकाजीस प्लेस ! मैं सभी जगह जाती हूँ, लेकिन इट्स डिफरन्ट हियर !'

सभी को ऐसी दिव्य-अनूठी अनुभूति कराते हुए भी हमेशा प्रगट स्वरूपों के प्रति प.पू. गुरुजी में 'दासत्व' छलकता नज़र आता है... पिछले वर्ष जनवरी के महीने में प.पू. पप्पाजी की तबियत देखने प.पू. गुरुजी व थोड़े मुक्त विद्यानगर गए थे। श्रीजी महाराज की पाघ में विद्यमान सभी स्वरूपों की मूर्तियों के घेरे में प.पू. गुरुजी की मूर्ति वाला एक कॅलेन्डर तब लेकर गए थे जिसमें प्रार्थना लिखी थी कि –

हे गुणातीत स्वरूपों !

'आप सभी के घेरे में ही मेरी रक्षा और सम्मान समाया है' – यह तथ्य कभी भूलूं नहीं, ऐसे आशीर्वाद देना।

– साधु मुकुंदजीवनदास

सभी स्वरूपों के प्रति उनका कैसा दासत्व होगा कि वे इन सभी की प्रसन्नता के पात्र बने हैं, जो कि हर स्वरूप के मुख पर स्पष्ट दिखाई भी पड़ता है।

विपरीत माहौल और हमारे असहकार को भी गिने बिना प्रगट प्रभु प.पू. काकाजी के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़ते प.पू. गुरुजी हमें जड़ बंधनों से मुक्त करने हमारे साथ की आत्मीयता रख कर पल-पल जी रहे हैं। समर्थ की समझदारी रखते हुए एक 'भुलकुं' (बालक) की भाँति बिना कोई कॉन्सियसनेस का जीवन जीकर 'पराभक्ति' अदा कर रहे हैं। प.पू. काकाजी की आज्ञा में मन, बुद्धि, चित्त को ठुकरा कर प.पू. काकाजी के अभिप्राय की भक्ति में ही उन्होंने श्रेय माना है। प.पू. गुरुजी की सैकण्ड-सैकण्ड का वर्तन प.पू. काकाजी कैसे राजी हों – प.पू. काकाजी को कैसे ठंडक हो, बस वही एक ध्येय लिए हैं। उसमें फिर कोई क्या सोचेगा -कोई क्या कहेगा उसकी परवाह वे नहीं करते; क्योंकि –भीतर में विराजमान प.पू. काकाजी की मूर्ति से पूछ कर ही उन्होंने वह करा होता है।

प.पू. गुरुजी के कई प्रसंग हम जब-जब देखते - सुनते हैं, तो मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी की मूर्ति हमारे मन में उभर आती है।

❋ मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी सर्दी के दिनों में एक बार जूनागढ़ से निकल कर 'भाडेर' गाँव पधारे थे और चौक में सभा कर रहे थे। हवा ठंडी चल रही थी, सो स्वामी बोले –'लगता है आज बर्फ पड़ेगी।' वहाँ बैठे दरबारगण ने स्वामी को कहा – 'महाराज ! यह तो आपके हाथ में है। आप दया करो तो इस गाँव की सीमा में बर्फ ना पड़े।' यह सुन कर स्वामी ने कहा – 'महाराज अच्छा करेंगे।' यूं कह कर सभा में सत्संग की बातें करी और फिर विश्राम करने गए। दूसरे दिन सुबह बर्फ पड़ी, लेकिन 'भाडेर' की सीमा में बर्फ नहीं गिरी ! इस प्रकार स्वामी के वचन से हरिभक्तों की रक्षा हुई...

इसी तरह इस वर्ष उत्तर भारत में कुछ दिन बहुत सर्दी पड़ी। कई सालों का रिकार्ड टूट गया। ठंड के बारे बात करते

हुए हरिभक्त बताते कि मौसम विशेषज्ञों ने अनुमान लगाया है कि दिल्ली का तापमान शून्य या माईनस तक पहुँच जाएगा। प.पू. गुरुजी जहाँ बैठते हैं, वहाँ तापमान सानूकूल रखवाने एक और नया हीटर लगवाया था।प.पू. गुरुजी तीन-चार बार एक ही बात दोहराते रहे कि *–यहाँ हीटर चालू रखा है ना, तो तापमान कन्ट्रोल में रहेगा।* हाँलाकि साऊथ दिल्ली के कई इलाकों में तो उस दिन सुबह गाड़ियों पर बर्फ जैसी ओस की परत भी जमी थी।लेकिन, धीरे-धीरे तापमान बढ़ता गया और शून्य तक या उससे नीचे नहीं गया !

देखा जाए तो बुद्धि से परे की ही बात है कि प.पू. गुरुजी ने हॉल में हीटर चलवाया, तो – विशेषज्ञों का अनुमान विफल करते हुए दिल्ली में ठंड कंट्रोल में रही ! हम गाते तो हैं कि *–'इसी के इशारे पर, चलती है कुदरत...'* लेकिन दिल से नहीं मानेंगे कि हाँ प.पू. गुरुजी के ऐसे चरित्र से ही ठंड कम हुई।

दरअसल तो निजी भक्तों को प्रतीति कराने ही ऐसे सत्पुरुषों का प्रयास होता है। जैसे कि गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने कहा था कि – *'ये जोगी रोज ११ माला फिराएगा, फलस्वरुप २५ वर्ष बाद भारत को आज़ादी मिलेगी।'* पर, इस तथ्य को कौन मानेगा ? लेकिन, प.पू. काकाजी कहते थे - *दुनिया न माने, मानव न माने, तुम तो मानो !* सो, अब हम तो यूं मानते हो जाएं !

आज हम जितने भी प.पू. गुरुजी के संबंध में - उनके आश्रय में जी रहे हैं, उनके मन का एक कोना जरुर सोचता होगा कि अगर प.पू. गुरुजी हमें नहीं मिले होते तो हमारा जीवन क्या होता ? ३१ दिसंबर की शाम को यानि – नए साल की पूर्व संध्या पर आयोजित सभा के पश्चात् सभी '**मध्यरात्रि महापूजा**' में एकत्रित हुए थे। महापूजा दौरान माहौल इतना दिव्य था कि **पू. मल्कानी अंकल** तो बोले – *'गुरुजी, यह बहुत अच्छा प्रोग्राम रखा; वर्ना हम सब कहीं इधर-उधर जाते ! दरअसल मीडिया वालों को तो इसका कवरेज करने आना चाहिए।'*

जगत में नए साल की शुरुआत के लिए नई पीढ़ी डिस्को वगैरह में जाती है। उसके बजाय आज करीब पाँच सौ मुक्त मध्यरात्रि को भजन-पूजा में निमग्न थे। यही प्रभु के प्रति उनकी श्रद्धा और प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के प्रति की प्रीति कही जाए। **प.पू. गुरुजी द्वारा तैयार हुआ कुटुंबभावना से जीता ऐसा निष्ठावान एवं आत्मीय समाज ही उनकी महिमा है।** यह कार्यक्रम पू. मल्कानी अंकल को इतनी हद तक स्पर्श कर गया कि नए वर्ष के ग्रीटींग्स कार्ड में भी उन्होंने प.पू. गुरुजी को लिख कर भेजा कि – *'थेंक्स फॉर धी मार्वलस एन्ड डिवाईन न्यू ईयर इव्स पार्टी सत्संग।'*

भूलें नहीं कि – प.पू. काकाजी की मूर्ति में अखंड लय और लीन रहते प.पू. गुरुजी निष्ठा वाले मुक्तों को जगत की जंजाल से छुड़ाने के साथ-साथ मन की मान्यताओं, हठ - मान - ईर्ष्या के भावों और चेतना को जकड़े अहम् से भी मुक्त करना चाहते हैं और इस हेतु ऐसे दिव्य समाज में हम सुहृद्भाव से जीएं यही हर पल उनकी चाहना रहती है।

प.पू. गुरुजी ने सभी मुक्तों को खूब लाड़-प्यार दिया है, पर यह भी उनका हमारे प्रति लगाव है कि हमारी वृत्तियों का कभी पोषण नहीं होने दिया और... हम कभी यदि ऐसी कोई गलती करने भी जाएं, तो माँ बच्चे की गलती पर उसे डाँट देती है-फटकार देती है, उसी तरह वे हमें गलत राह पर जाने से रोक कर सच्ची सूझ देते हैं।

❋ अबकी सर्दी में एक बार मटर छीलने शाम को सभी एकत्रित बैठे थे।मटर छीलने की शुरुआत होते ही प.पू. गुरुजी बोले कि – *'एक घंटे में यह मटर की बोरी छील दोगे, तो सब को चॉकलेट दूँगा।'*

किसी मुक्त के मुँह से सहज निकला कि एक घंटे में तो नहीं हो पाएगी। हमें सत्पुरुष के प्रति लगाव जरुर है, परंतु प्रसंग पर हम यह भूल जाते हैं कि सब कुछ उनके बल से ही तो हो पाता है। हमें तो केवल 'हाँ' ही भरनी होती है। **हमें ख्याल नहीं कि एक भरोसे से हमारे मात्र 'हाँ' भरने पर ही हमें वे बख़्शिश दे देते हैं।** प.पू. गुरुजी ने एक बार गुरुवर्य योगीजी महाराज की एक बोधकथा बताई थी कि – एक राजा ने यह एलान करवाया कि गाँव के कुँए में डुबकी लगा कर जो कोरा बाहर निकलेगा, उसे एक गाँव बख़्शिश मिलेगा। यह सुन कर सभी को ऐसा हुआ कि भला ऐसा कैसे हो सकता है कि कुँए में डुबकी लगाएं और कोरे बाहर निकलें ? लेकिन, एक जने ने यह सुन कर डुबकी लगा ही दी – यह सोच कर कि ऐसी आज्ञा करने वाला हमारा राजा मूर्ख तो है नहीं। और... वह भीगा हुआ ही बाहर निकला। तब भी राजा ने उसे गाँव बख़्शिश में दिया ! **राजा ने बख़्शिश**

इसलिए दी कि उनके कहे पर भरोसा रख कर उसने डुबकी तो लगाई ना ! ऐसी ही एक घंटे में मटर छीलने वाली यह बात थी। परंतु गुणातीत स्वरूपों के प्रति भीतर में छिपे हमारे मायिकभाव के कारण हम ऐसे मूल्यांकन कर लेते हैं। **वास्तव में कार्य से उन्हें कोई लेन-देन नहीं है। पर, प्रसंग पर हम उन्हें कितना कर्ता-हर्ता व दिव्य मान पाते हैं उसका यह बॅरॉमीटर होता है।**

प.पू. गुरुजी आज हमें हर प्रकार से सुखी करने दिन-रात अथक् परिश्रम कर रहे हैं... प्रभु की मूर्ति लुटाने ही मानो गरजु बने हैं। उसका छोटे-छोटे रोजमर्रा के प्रसंगों से दर्शन हो ही जाता है। मंदिर के प्रति खूब सद्भावना से जुड़े डॉ. वर्षा भारद्वाज एक दिन अपने एक साल के जुड़वा पोतों को मंदिर दर्शन कराने ले आए। प.पू. गुरुजी उन बच्चों को टॉफी देने के लिए अपने पास बुला रहे थे, लेकिन वे झिझक रहे थे। तो, प.पू. गुरुजी सहज ही बोले कि – ***'तुम एक कदम चलो, मैं पाँच कदम चलूँगा !'*** आज जब एक साल के छोटे बच्चे के लिए प.पू. गुरुजी ऐसा कहते हैं तो हम यदि उनके कहे मुताबिक थोड़ा भी चलेंगे, तो वे सामने से अपने लिए कितना करेंगे ?

उपरोक्त प्रसंगों में सत्संग का ***'कायदा'*** निहित है। तो, हे गुरुजी ! आपकी ६९वीं जन्मजयंती पर भगवान स्वामिनारायण व सभी गुणातीत स्वरूपों एवं आपके श्री चरणों में प्रार्थना कि –

प्रसंग पर हमारी निष्ठा डिगे नहीं...

जो हठ, मान, ईर्ष्या के कारण उठे हमारे स्पंदन आपको दुःख पहुँचाते हैं, उन भावों से अब आपका बल लेकर ऊपर उठ जाएं...

'सेवा हो पाए तो करनी, पर असेवा तो नहीं ही करनी'– वह '**असेवा**' क्या ?

तो, **संबंध वाले मुक्तों के अभाव - अवगुण में पड़ना।**

गुरुहरि योगीजी महाराज के कहे मुताबिक ऐसी 'असेवा' का रास्ता तो हम बिलकुल स्टॉप-बंद ही कर दें...

आपकी रुचि - अनुवृत्ति के मुताबिक ही हमारा समग्र तंत्र वर्ते...

'भक्तों का पक्ष रखना' – हमारी जीवनशैली बन जाए...

'स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव' से जीएं...

सात्त्विक भाव की स्वर्ण ज़ंजीरों को तोड़ कर प्रत्यक्ष परम सत्य स्वरूप से ही प्रेरित हर क्रिया करते हो जाएं।

✡✡✡

धन्य भारत की भूमि जहाँ श्रीहरि प्रगट हुए...

वसुंधरा धन्य हुई कि संवत् १८३७ के चैत्र महीने की शुक्ला नौमी को – **रामनौमी** के महामंगलकारी दिन रात को दस बजे परब्रह्म तत्त्व - अवतारों के अवतारी सर्वोपरि पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण ने भक्तिमाता और धर्मपिता द्वारा भारत माता की गोद भरी।

घनश्याम, नीलकंठ, सरजुदास, सहजानंदस्वामी, श्रीजी महाराज और भगवान स्वामिनारायण के नाम से वे पहचाने गए। लेकिन उनके स्वरूप की तत्त्व से पहचान किसी को नहीं हो पाई। पृथ्वी पर उनका कार्य सामान्य - सा लगता था, पर आध्यात्मिक इतिहास में अद्वितीय और बेजोड़ है और रहेगा। बेशक, समाधि प्रकरण से उन्होंने स्वयं ही अपने स्वरूप की पहचान कराई कि ***वे तो पूर्ण पुरुषोत्तमनारायण अक्षरधाम के पति हैं और साथ ही उनके अवतरण का मर्म समझाने अपना रहने का धाम मूल अक्षरब्रह्म को पृथ्वी पर लाए। उन्हीं के द्वारा 'प्रगट उपासना' भी अक्षुण्ण रखी।*** जगत ने जो देखा ना हो, सुना ना हो, जाना ना हो – ऐसा कल्याण का सरल मार्ग सभी के लिए खुल्ला कर दिया।

जीवों पर श्रीहरि का अनुग्रह और कृपा कही जाए कि उन्होंने सभी को स्वीकारा। छोटे - बड़े, ज्ञानी - अज्ञानी, बनिये, ब्राह्मण या काठी - कोली - कणबी, मुमुक्षु या चोर -लुटेरे, स्त्री - पुरुष, राजा या रंक सभी उनके आश्रित बने। सूर्य की भाँति सभी पर उनकी एक जैसी कृपा ! पृथ्वी पर प्रगट होकर मानो समग्र मानवजाति पर करुणा का धोध बरसा दिया। और... आश्रितों को अद्भुत वरदान भी दिए, जैसे –

* मेरे ब्रह्मस्वरूप संत द्वारा मानवस्वरूप में पृथ्वी पर मैं हमेशा प्रगट रहूँगा।
* मेरे आश्रितजन को अंतकाल में मैं लेने जरुर आऊँगा।
* अपने गुरु रामानंदस्वामिजी के पास माँगा है कि आपके भक्त को अन्न - वस्त्र से कभी दुःख ना हो और उसे

एक बिच्छु के डंक का दुःख आने वाला हो, तो मुझे करोड़ बिच्छु के डंक का दुःख आए, लेकिन उसे वो दुःख ना आए।

* शिक्षापत्रीरूपी '**आचारसंहिता**' दी, जिसके मुताबिक रहने से इह लोक और परलोक में कभी दुःख नहीं आए।
* सकल शास्त्रों के सार रूप '**वचनामृत**' दिया, जिससे प्रभु प्राप्ति की साधना में आती हर अड़चन का हल मिले।
* पंच प्रण युक्त संत दिए, जिनके प्रति के सद्भाव मात्र से पंचविषय के रमणीय राग टले, त्याग - वैराग्य उदय हों और जीव निर्वासनिक हो जाए।
* विविध उत्सवों की प्रथा शुरु करके जीवन में नवीनता और ब्रह्मानंद भर दिया।
* दिव्य लीलाओं से स्मृतियों में डुबो - डुबो कर, मन को प्रशांत करके प्राप्ति की मस्ती से भर दिया।
* अपने अश्रित में तिलमात्र कसर नहीं रहने देने का भरोसा दिया।
* जीवों को ब्रह्मरूप करने गुणातीत सत्पुरुषों की परंपरा जारी रखी।
* जीव को वज्रसार जैसी माया से अलिप्त करके अहंता - ममता से परे करने '**साक्षी रूप से**' जीव में विराजमान हुए।
* '**निष्काम धर्म**' स्थापित करके सर्वोच्च प्राप्ति मौज में दी।
* जीव - प्राणी मात्र के कल्याण के लिए किसी भी प्रकार की अपेक्षा रखे बिना अकारण कृपा करने उद्दात्त संबंधयोग दिया; जैसे कि –

  मेरे, मेरे संत के और सत्संगी के संबंध में जो आएं, उसे भोजन कराएं या उसके मटके का पानी पिएं – उन सभी का मैं कल्याण करूँगा।
* सर्वोपरि एवं जीवंत '**स्वामिनारायण महामंत्र**' देकर सभी को हर प्रकार से निर्भय किया और भरोसा दिया कि मुझे जहाँ भी याद करोगे, वहाँ हरी घास में रह कर भी रक्षा करूँगा।
* कोई भी साधन किए बिना दृढ़ एवं अनन्य आसरे से जुड़े आश्रितों को काल, कर्म, माया से छुड़वाया।

यूं, श्रीजी महाराज ने उनके भगवत्स्वरूप संत द्वारा **उनका आसरा दृढ़ रखने के सिवा** हम से अन्य कोई अपेक्षा नहीं रखी और किसी प्रकार की उदासी रहने नहीं दी। इससे भी अधिक सभी को उनकी मूर्ति में जोड़ने के लिए सभी के भाव ग्रहण करे और उनकी कक्षा पर आकर हर एक को लाड़ लड़ाए। आश्रितों को तन, मन, धन और आत्मा से सुखी करने ही श्रीजी महाराज ने सभी की परवरिश करी।

चैतन्य की प्रगति कराने किसी भी साधन की अपेक्षा रखे बिना हर एक को उसके अंग के मुताबिक सेवा देकर अपनी मूर्ति का चिंतन करवाया।

- परमहंस, जो कि तप - त्याग की मूर्ति थे, उन्हें २१२ नियम देकर खुद की मूर्ति में ओतप्रोत रखा।
- दादा खाचर जैसे प्रेमी भक्त के यहाँ लगातार रह कर उन्हें अनेक प्रकार की स्मृतियाँ देकर खुद की दिव्य मूर्ति में पकड़े रखा।
- दासत्व के अंग वाले राजाभाई जैसे को पर्वतभाई के खेत में हल जोतने की सेवा देकर और जेतलपुर की वेश्या से गेहूँ पिसवा कर कल्याण किया।

यूं हमारी रीति से ही भक्तवत्सल भगवान चले। भक्तों के साथ जिस कक्षा की रसबसता का उन्होंने दर्शन कराया, वह आध्यात्मिक जगत में बेजोड़ है। केवल अपना दिव्य संबंध देने की ही उन्हें तान और... उनका संबंध होते ही हर एक को एक 'हाश' – अपने कल्याण की प्रतीति हो जाती ! यही उनकी अद्वितीय दिव्यता का रहस्यमय सबूत है।

आज भी कल्याण के मार्ग पर हमें अग्रसर करने उनके ब्रह्मस्वरूप संतों द्वारा सत्संग में हमेशा प्रगट प्रमाण विचरते हुए श्रीजी महाराज हमारा पल - पल जतन कर रहे हैं। सो, उनका परिश्रम सफल करने हम अब दृढ़ संकल्प हों।

वचनामृत गढडा मध्य २८ में श्रीजी महाराज ने कहा है – ***'जन्मोंजन्म भगवान के भक्तों के साथ रह कर उनकी सेवा करनी है।'*** तो, हमें मिले अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के प्रत्यक्ष स्वरूप को राजी करने श्रीजी महाराज के संबंधयोग को मान्य रख कर, छोटे से छोटे अल्प संबंध वाले मुक्तों की

प्रकृति - स्वभाव देखे बिना उनकी माहात्म्ययुक्त सेवा में जुट जाएं। उनके पास हमारा 'अहम्' छोड़ कर बस एक यही सत्य मानें कि – ***'देह और देह के सगे - संबंधी की अपेक्षा भगवान के भक्तों को अधिक प्यारा रखना है...'*** भक्तों की ऐसी महिमा हमारे भीतर दृढ़ हो, यही श्रीजी महाराज की हमने जयंती मनाई और ऐसा जीवन जीने सभी प्रगट -प्रत्यक्ष स्वरूप हमें बल दें ऐसी उनके श्री चरणों में प्रार्थना !

✡✡✡

हरिस्वामी को पहचान बंदे अक्षररूप हो जाएगा !

४ मई.... गुरुहरि योगीजी महाराज के आध्यात्मिक वारिसों में से एक व गुणातीत समाज के मुक्तों की अमूल्य पूंजी यानि प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती...

आज देश-विदेश में भारतीय संस्कारों की संवृद्धि करके जीवों को सच्चा-पवित्र जीवन जीने की कला सिखाने अविरत परिश्रम करते भगवान स्वामिनारायण की गुणातीत संत परंपरा के आध्यात्मिक वारिसदारों में से प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी के प्रेमभरा स्पर्श, मूर्ति की दिव्यता सभी को बरबस अपनी ओर खींचती है और हृदय ठंडक को पाता है। उनके दर्शन, सेवा, समागम से संबंध में आए अनेक चैतन्य त्रिविध ताप से मुक्त होकर दिव्य शांति का अनुभव करते हैं। सभी को लौकिक -अलौकिक सर्व प्रकार के हल प्राप्त होते हैं। स्थूल विवेक से लेकर आध्यात्मिक विवेक तक सीखने की एक सही दिशा, सूझ प्राप्त होती है और राजसी, तामसी एवं सात्विक भावों के बंधन कटते हैं। दरअसल जीव में एक विस्फोट करके मुमुक्षुओं को अर्चिमार्ग से ब्रह्मभाव की ओर ले जाने ही प्रभु को सांगोपांग धारण करी ऐसी विभूतियों का एकमात्र उद्यम होता है... सच, प.पू. स्वामिजी के रूप में गुरुहरि योगीजी महाराज ने समग्र गुणातीत समाज को एक अनुपम भेंट दी है... **प.पू. स्वामिजी गुणातीत समाज के 'गौरव' का स्तंभ हैं।** उनका जीवन एवं गुरु के वचन में उनकी आस्था - अडिगता मुमुक्षुओं के लिए आदर्श है।

प.पू. स्वामिजी ने (युवक के रूप में) गुरुहरि योगीजी महाराज से जब कंठी लेकर वर्तमान धारण किया, तब बापा ने उन्हें नियम दिया कि हर रोज ठंडे पानी से स्नान करना...

घर पर प.पू. स्वामिजी के पूर्वाश्रम के मातुश्री - पुत्र के प्रति अत्यधिक ममता के कारण उन्हें गरम पानी से स्नान करने कहते। प.पू. स्वामिजी को दुविधा हुई। सो, उन्होंने इसके बीच का रास्ता निकाला। उनकी माँ बाथरूम में गरम पानी की बाल्टी रख देते। प.पू. स्वामिजी अंदर नहाने जाते तो गरम पानी की बाल्टी गिरा देते और गुरु आज्ञा के मुताबिक ठंडे पानी से स्नान करके बाहर आते...

गुरु की इतनी छोटी - सी आज्ञा को पालने भी प.पू. स्वामिजी की कैसी लगन होगी, वह इस छोटे से प्रसंग से पता चलता है। प.पू. स्वामिजी की जगह हम हों, तो मन के साथ यूं कॉम्प्रोमाईझ करें कि घर में रहते हैं, सो माँ का दिल भी रखना तो पड़ता है। प.पू. स्वामिजी ने अपने जीवन की हर क्षण में गुरुहरि योगीजी महाराज की हाज़िरी मानी। तभी तो गुरुहरि ने उनकी सेवा की लगन पर अपनी प्रसन्नता लुटाते हुए निम्न आशीर्वाद भी दिए, जब प.पू. स्वामिजी ने (युवक रूप में) तीन दिन तक सारंगपुर मंदिर के 'नारायण घाट' की सफाई अकेले हाथ करी।

- ❋ ***ब्रह्मज्ञान का झरना फूटेगा और अखंडित रहेगा। जैसा हमने शास्त्रीजी महाराज का सेवन किया है, वैसा तुमने हमारा सेवन किया है।***
- ❋ ***जितने युवक तुम्हारे संबंध में आएंगे, उन सभी का आत्यंतिक कल्याण शास्त्रीजी महाराज करेंगे।***
- ❋ ***तुम निष्कामी होओगे और हज़ारों युवक तुम्हारे द्वारा निष्कामी होंगे।***
- ❋ ***तुम जो संकल्प करोगे, वह ब्रह्मांड में व्यापक बनेगा।***

गुरुहरि योगीजी महाराज द्वारा दिए गए ये आशीर्वाद प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की 'गुणातीत चेतना' व उनका अनादि का संबंध होने का दर्शन करा देते हैं।

पंचविषयों का पहाड़ तोड़ कर जीभ, कान, आँख पॉझीटिव बना कर भगवान के बल से हम सब जीते हो जाए, आत्यंतिक कल्याण की राह पर चलें इसी ध्येय के साथ कई कितने युवकों को अपने दिव्य प्रेम में डुबो कर वे अग्रसर कर रहे हैं। साथ ही व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की रक्षा कर रहे हैं – हृदय परिवर्तन कर रहे हैं। कलियुग

में विषय - वासना के तांडव के बीच जीवन की दिशा बदल कर, प्रभु परायण, संतप्रधान जीवन जीते मुक्तों का सर्जन प.पू. स्वामिजी कर रहे हैं। फलस्वरूप मन -बुद्धि और देह की उपेक्षा करके प्रभु और प्रभु के भक्तों की सेवा -भक्ति में ही जीवन का परम आनंद जिन्होंने माना है ऐसा संतों, युवकों, बहनों, अंबरीषों का **बृहद् समाज** प.पू. स्वामिजी की महिमा बना है और यही है **प.पू. स्वामिजी के आध्यात्मिक युगकार्य का जीवंत परिचय** !

ऐसे प.पू. स्वामिजी का हमें संबंध हुआ... उनकी कृपादृष्टि हम पड़ी ! तो आइए, ऐसी दिव्य विभूति के प्रागट्य दिन के महामंगलकारी अवसर पर गद्‌गद् होकर प्रार्थना करें कि —

जीवन की हर पल प्रगट मिले गुणातीत स्वरूप को कर्ता - हर्ता, सर्वज्ञ -अंतर्यामी, दिव्य मान कर जीने की शुरुआत करें और तभी...साधु के कल्याणकारी गुणों को प्राप्त कर सकेंगे। मन की छुपी चोरियाँ, बहानेबाजी, बचाव, अच्छाईपेशी आदि के आवरण को कम से कम आपके पास तो छोड़ कर हम निष्कपट वर्तें... और जैसे प.पू. स्वामिजी ने ही एक बार 'भक्त' की परिभाषा बताते हुए कहा है कि — ***' प्रभु का भक्त एक ही प्लानिंग करता है... गुणगान ही गाता रहे, कोने में बैठ कर तू ही - तू ही भजन किया करे, सभी की प्रभु के भाव से सेवा किया करे...'***
तो, ऐसे '**भक्त**' बनने की दिशा में अग्रसर होने हम कृतनिश्चयी बने ऐसे आशिष हे स्वामिजी ! आप बरसाना...

✡✡✡

श्रवण, मनन, निदिध्यासन

- ❋ प.पू. काकाजी की परावाणी में हमने सुना था कि '**एक रुचि वाले**' दो व्यक्ति यानि दो लाख के बराबर और '**सुरुचि वाले**' दो व्यक्ति यानि दो करोड़ के बराबर कहे जाएं। इस शिविर में अधिकतर हम ऐसे '**रुचि-सुरुचि**' वाले इकट्ठे हुए हैं।
- ❋ हम कई बार स्वरूप को अपने मन की पूरी बात इस डर से नहीं बताते कि वे हमारे बारे क्या सोचेंगे या सभा में सब के सामने कहीं कह ना दें। पर, **असल में स्वरूप के प्रति वह हमारा मनुष्यभाव है।** अगर वे सभा में सब के बीच कुछ कह भी देते हैं, तो उसके पीछे उनकी भावना हमारी मान की वृत्ति पर प्रहार करने की होती है।
- ❋ इन बातों को ध्यान से यूं सुनना कि **ये बातें मेरे लिए ही हो रही हैं...** मुझे ही खुद में बदलाव लाना है।
- ❋ गुरुहरि योगीजी महाराज ने मुझे कहा था कि तुम महाराज के समय से — पाँच जन्म से साधु होते आ रहे हो। हम विचार करें कि हम पर कितने मेहरबान होंगे वे ? **सवा — दो सौ साल से वे हमारे पीछे इतना परिश्रम जो कर रहे हैं, वे हमारी कुछ भूलों के कारण हमें छोड़ देंगे क्या ?** पर, प्रभु का यह मेथेमॅटिक्स हम नहीं समझ पाएंगे।
- ❋ बड़े संत की हर क्रिया चैतन्यलक्षी होती है। भक्तों को स्मृति-मूर्ति देने ही होती है।

  एक बार प.पू. काकाजी अपने नाखून काट रहे थे। प.पू. गुरुजी वहाँ बैठ कर प.पू. काकाजी के दर्शन कर रहे थे। इतने में प.पू. काकाजी बोले कि जिसके नाखून बढ़ जाते हैं, वो अनसिविलाईज़्ड - असंस्कारी व्यक्ति कहा जाए। सो, नाखून बढ़ने नहीं देने चाहिए।

  प.पू. गुरुजी कहते हैं कि उस दिन से वे जब भी अपने नाखून काटते हैं, तो उन्हें तुरंत प.पू. काकाजी की मूर्ति की स्मृति हो आती है।
- ❋ कभी मानो किसी भी कारणवश यदि हम मंदिर जाना-करना कम कर दें और इस बात से दुःखी हों, तब अपने भीतर में टटोलना चाहिए कि हमें जो अंतर में वेदना हुई है, वो हमारे अपमान-अहंकार की वृत्ति पर चोट लगने के कारण है या सत्पुरुष के दर्शन, सेवा, समागम का लाभ खोने के कारण हम दुःखी हैं ? यह फर्क हमें खुद को ही पता चलेगा। **अपना गुरु स्वयं को ही होना पड़ता है।**
- ❋ हम में से कई अमेरिका जाकर पैसा कमाने का सोचते हैं। हम बोलते तो यह हैं कि पैसे तो महाराज देने वाले हैं। तो फिर महाराज से ही माँगें। वे यहाँ इंडिया में भी दे देंगे। हाँ, महाराज ने हमें वहाँ जाने कहा हो — तो, बात अलग है। धीरुभाई अंबानी पैसा कमाने अमेरिका गए थे क्या ?

निमंत्रण

आइए,

परम पूज्य गुरुजी की 69 वीं जन्म जयंती

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी

एवं

प.पू. साहेबजी की निश्रा और

प.पू. निर्मलस्वामिजी आदि संतगण व

पू. वशीभाई आदि योगेश्वरों की दिव्य सन्निधि में

26 मार्च 2006, रविवार की सायं 5:00 से 9:00

सपरिवार ईष्ट मित्रमंडल सहित

सत्संग, भजन - कीर्तन करके मनाएं।

– गुणातीत कुनबा, दिल्ली

Statement about ownership and other particulars about newspaper

'भगवत् कृपा' (Form IV Rule 8)

1. *Place of Publication* : Yogi Divine Society, 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
2. *Periodicity of its Publication* : Bi-Monthly
3. *Printer's Name* : Prabhaker Rao
4. *Nationality* : Indian
   Address : 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. *Publisher's Name* :
   Nationality : As above
   Address :
6. *Editor's Name* :
   Nationality : As above
   Address :
7. *Owner's Name* : Yogi Divine Society
   Nationality : Indian
   Address : 'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-

PRABHAKER RAO

Date: 15 March, 2006 Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	26.3.2006,	रविवार	–	एकादशी, व्रत **'ताड़देव' - अशोकविहार मंदिर में प.पू. गुरुजी की ६९वीं जन्म जयंती मनाएंगे। (सायं ५:०० से ९:००)**
(2)	दि.	30.3.2006,	गुरुवार	–	गुडी पड़वा
(3)	दि.	6.4.2006,	गुरुवार	–	रामनौमी, **भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती**, व्रत
(4)	दि.	9.4.2006,	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(5)	दि.	11.4.2006,	मंगलवार	–	गुरुहरि योगीजी महाराज का दीक्षा दिन
(6)	दि.	24.4.2006,	सोमवार	–	एकादशी, व्रत
(7)	दि.	30.4.2006,	रविवार	–	अखात्रीज
(8)	दि.	1.5.2006,	सोमवार	–	गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की अंतर्धान तिथि
(9)	दि.	4.5.2006,	गुरुवार	–	**प्र. ब्र. स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती**
(10)	दि.	9.5.2006,	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत
(11)	दि.	11.5.2006,	गुरुवार	–	नृसिंह जयंती

R.N.I. 28971/ 77

Air Mail

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine

Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :—

Printer, Publisher, Editor :—

SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,

Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2722 9327

Printed at : **Delux Offset Printers**

308/4, Shahzadabagh, Opp. Rohtak Road, Daya Basti, Delhi

To